OM-9- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 09/07/2021 9:39 AM Page 5

भगवान की एक्सेंज ऑफर

एक बार एक दुःखी अपने ईश्वर से शिकायत कर रहा था। "आप मेरा ख्याल नहीं रखते, मैं आपका इतना बड़ा भक्त हूँ, आपकी सेवा करता हूँ। रात-दिन आपका स्मरण करता हूँ। फिर भी मेरी ज़िंदगी में ही सबसे ज़्यादा दुःख क्यों? परेशानियों का अम्बार लगा हुआ है। एक खत्म होती नहीं कि दूसरी मुसीबत तैयार रहती है। दूसरों कि तो आप सुनते हो। उन्हें तो हर खुशी देते हो। देखो आप ने सभी को सारे सुख दिए हैं, मगर मेरे हिस्से में केवल दुःख ही दिए।

फिर भगवान की आवाज़ उसे अपने अंतर्मन में सुनाई दी, ऐसा नहीं बेटा! सबके अपने-अपने दुःख, परेशानियाँ हैं। अपने कर्मों के अनुसार हर एक को उसका फल प्राप्त होता है। यह मात्र तुम्हारी गलतफ़हमी है।

लेकिन नहीं। भक्त है कि सुनने को राज़ी ही नहीं।

आखिर अपने इस नादान भक्त को समझा-समझा कर थक चुके भगवान् ने एक उपाय निकाला।

वे बोले, चलो ठीक है मैं तुम्हें एक अवसर और देता हूँ, अपनी किस्मत बदलने का।

यह देखो यहां पर एक बड़ा-सा, पुराना पेड़ है। इस पर सभी ने अपने-अपने दुःख-दर्द और तमाम परेशानियां, तकलीफें, दरिद्रता, बीमारियाँ, तनाव, चिंता आदि सब एक पोटली में बाँध कर उस पेड़ पर लटका दिए हैं।

जिसे भी जो कुछ भी दुःख हो, वो वहाँ जाए और अपनी समस्त परेशानियों की पोटली बना कर उस पेड़ पर टांग देता है। तुम भी ऐसा ही करो, इससे तुम्हारी समस्या का हल हो जाएगा।

"भक्त तो खुशी के मारे उछल पड़ा। 'धन्य हैं प्रभु जी आप तो। अभी जाता हूँ मैं।"

तभी प्रभु बोले, लेकिन मेरी एक छोटी-सी शर्त है।

कैसी शर्त भगवन?

तुम जब अपने सारे दुःखों की, परेशानियों की पोटली बना कर उस पर टांग चुके होंगे तब उस पेड़ पर पहले से लटकी हुई किसी भी पोटली को तुम्हें अपने साथ लेकर आना होगा, तुम्हारे लिए।

भक्त को थोड़ा अजीब लगा लेकिन उसने सोचा चलो ठीक है। फिर उसने अपनी सारी समस्याओं की एक पोटली बना कर पेड़ पर टांग दी। चलो एक काम तो हो गया अब मुझे जीवन में कोई चिंता नहीं। लेकिन प्रभुजी ने कहा था कि एक पोटली जाते समय साथ ले जाना।

ठीक है, कौन-सी वाली लूँ, यह छोटी वाली ठीक रहेगी। दूसरे ही क्षण उसे ख्याल आया मगर पता नहीं इसमें क्या है। चलो वो वाली ले लेता हूँ। अरे बाप रे! मगर इसमें कोई गंभीर बीमारी निकली तो।

नहीं-नहीं.. अच्छा यह वाली लेता हूँ। मगर पता नहीं यह किसकी है और इसमें क्या-क्या दुःख है।

हे भगवान, इतना कन्फ्यूज़न! वो बहुत परेशान हो गया सच में "बंद मुट्ठि लाख की, खुल गयी तो खाक की।

जब तक पता नहीं है कि दूसरी पोटलियों में क्या दुःख-परेशानियां, चिंता-मुसीबतें हैं.. तब तक तो ठीक लग रहा था। मगर यदि इसमें अपने से भी ज़्यादा दुःख निकले तो!

हे भगवान.. कहाँ हो?

भगवान् बोले "क्यों क्या हुआ? जो पसंद आये वो उठा लो.."

" नहीं प्रभु क्षमा कर दो.. नादान था जो खुद को सबसे दुःखी समझ रहा था.. यहाँ तो मेरे जैसे अनगिनत हैं, और मुझे यह भी नहीं पता कि उनका दुःख-चिंता क्या है? मुझे खुद की परेशानियाँ, समस्याएँ कम से कम मालूम तो है। नहीं अब मैं निराश नहीं होऊँगा.. सभी के अपने-अपने दुःख हैं, मैं भी अपनी चिंताओं - परेशानियों का साहस से मुकाबला करूँगा, उनका सामना करूँगा, न कि उनसे मागूंगा। धन्यवाद प्रभु, आप जब मेरे साथ हैं, तो हर शक्ति मेरे साथ है।

भगवान् ने कहा यह "एक्सचेंज ऑफर" सदा के लिए सबके लिए खुली है!!

दिल की बात

चलते-चलते आत्मा का भाग्य ऐसा बन जाये कि उसे धरती पर ही भगवान मिल जाये। न केवल मिल जाये, जीवन ही उसी का हो जाये। वो दिल के करीब बैठ संवारे, वो बैठ निखारे। सर्वोपरि ज्ञान से पतित बुद्धि को दिव्य परिष्कृत करे। कितना बड़ा सौभाग्य है! यह एहसास ही दिल को गदगद करता है। कथाओं में चमक दिखाने वाला भगवान टीचर बन मेरे भाग्य को यूँ चमकीला बनायेगा। यह सोचते ही दिल रोमांच से भर शुक्रिया के गीत गाता है।

इस अनोखी पढ़ाई की यह खूबी है कि इसमें कोई हद की नहीं दिल की जिगरी लगन, तीव्र पुरुषार्थ और तीखी बुद्धि की बदौलत, कुछ मास वाले भी पुरानों से आगे निकल बहुत साल वालों पर भारी पड़ सकते हैं। इसलिए जब तक पूरे पास न हों, कर्मातीत अवस्था न हो तब तक पुरुषार्थ करना है। कौड़ियों के पीछे न भागकर, रूहानी सेवा में सब कुछ सफल करना है।

भगवान के बेहद स्कूल में बैठ दिल नशे में झूमता है। भगवान राजयोग ही सिखाते हैं प्रजायोग नहीं। वह तो पुरुषार्थ प्रमाण मिलता है। बाबा साकार में आकर बच्चों को निहारते हैं, पढ़ाते और मिलन की सौगात देते हैं। ऐसी अनोखी सौगात देने वाले बाबा से कितनी प्रीत, कितना लव होना चाहिए। जो भगवान हमें कौड़ी से हीरे जैसा बहुमूल्य बनाते हैं उनको कितना याद करना चाहिए।

सम्बन्धों में बुद्धि का ही अहम रोल होता है। यह बुद्धि जब परमात्मा से जुड़ती है तो उनकी अनंत शक्तियों, खज़ानों से भरपूर हो, अधिकारी बनती है तो उसे अपने अधिकार की स्मृति में न कुछ मांगने की, न ही कोई अधीनता रहती। क्योंकि अपनी प्राप्ति और अधिकारों के नशे में दिल डूबा रहता है। जितना दिल दैहिक लगावों से मुक्त हो न्यारा होता है उतना वह स्वयं के साथ प्रकृति को भी पावन बनाता है। उसकी विदेही स्थिति ऐसा कमाल करती है कि प्रकृति भी निरन्तर वायब्रेशन ग्रहण कर पावनता से सजती जाती है।

खुशी का प्रोडक्ट आनंद हासिल करने का ज़रिया... विनम्रता

एकांत में समय बिताकर ही किया जा सकता है विनम्रता को हासिल

जीवन में आनंद खोज रहे लोगों को एकांत में वक्त बिताना चाहिए, इससे विनम्रता आती है। हम दुनिया भर घूम चुके हैं, हज़ारों लोगों से मिलते हैं लेकिन जब भी वक्त मिलता है, एकांत में, प्रकृति के बीच वक्त बिताता हूँ। हालांकि मैंने तो नियम ही बना लिया है, एक घंटा एकांत में बिताने का। सुबह के ब्रह्ममुहुर्त का समय अपने लिए निकालिए। जब बाकी दुनिया सो रही हो, तब दिन की शुरुआत का एक घंटा खुद को दें। भटकावों से भरी इस दुनिया में लिखने, पढ़ने, सोचने, ध्यान लगाने, योग करने, मेडिटेशन के लिए वक्त निकालना ज़रूरी है। जीवन में विनम्रता के महत्व के मायने बहुत हैं।

1 विनम्र रहिए : विनम्र होना बड़प्पन की निशानी है, कमज़ोरी नहीं। आज दुनिया में वही लीडर्स बड़े हैं जो ज़्यादा शोर कर रहे हैं, लेकिन महान नहीं हैं। महान लीडर्स जैसे दादी प्रकाशमणि, महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द आदि जिनमें विनम्रता का भाव था।

2 एकांत में वक्त बिताएं : बहिर्मुखी लोगों को बाहर लोगों से ऊर्जा मिलती है। जबकि अंतर्मुखी लोग एकांत में भी ऊर्जावान रहते हैं। अंतरात्मा की ऊर्जा से रूबरू होते हैं। आत्म प्रकाश से उज्जवल होते हैं। 'इन टू आउट' क्वालिटी की ऊर्जा प्रवाह होती है। जो कि स्वयं व औरों को सहायता प्रदान करती है। सुसेन केन नामक लेखिका ने खूबसूरत किताब लिखी है 'क्वाइट : द पावर ऑफ इंट्रॉवर्ट...'। ईश्वर प्रदत्त आत्म ऊर्जा हमारे उज्जवल भविष्य का निर्माण करता है।

3 दिल खोलिए : हम ऐसी दुनिया में रहते हैं, जहाँ 95प्रतिशत लोग गलत चीज़ों के पीछे भाग रहे हैं। न स्व अस्तित्व का ख्याल, न ही

स्वास्थ्य का ख्याल, बस भागे जा रहे हैं। 'जब तक आपका दिल खुल नहीं जाता, आपको अपना दिल तोड़ते रहना चाहिए।' दिल खोलकर ही विनम्रता हासिल की जा सकती है। विनम्रता महान बनाती है।

4 अभ्यास करिए : विनम्र बनने का भी अभ्यास कर सकते हैं। एक हफ्ते तक गौर करें कि आप कितनी बार 'मैं' -'मेरा' बोलते हैं। अगर अपनी चीज़ों, आइडिया, महत्वकांक्षाओं का प्रचार कर रहे हैं, मतलब असुरक्षित महसूस कर रहे हैं तो इससे बचें। इच्छा वही जो सफलता दिलाती है, जो आनंद-खुशी दिलाती है।

विनम्रता आनंद का साथी बनाती है। ऐसा अभ्यास करने पर विनम्रता और आनंद एक सिक्के के दो पहलू बन जायेंगे- जो आनंदमय ज़िंदगी प्रदान करेंगे।

ऑस्ट्रेलिया-सिडनी। इंटरनेशनल डे ऑफ फैमिलीज़ के उपलक्ष्य में 'वन वर्ल्ड, वन फैमिली', 'फैमिलीज़ एंड न्यू टेक्नोलॉजीज़' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ के युनाइटेड नेशन्स टीम ने पारिवारिक सम्बंधों और गतिशीलता पर नई तकनीकों के प्रभाव के बारे में दुनिया भर के परिवारों की कहानियों को कैप्चर किया। ब्र.कु. मंदा पटेल,ऑक्सफोर्ड ने भी अपना संदेश सभी के साथ साझा किया।

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारी संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती 'मम्मा' के 56वें पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मम्मा को माल्यार्पण करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।